Class- B.A(Hons) SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन।

पिछली कक्षाओं में हमने हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता पर चर्चा की। जिस सन्दर्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आदि हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं में राष्ट्रीयता का वर्णन किया था। उसी विषय को आगे बढ़ाते हुये सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में राष्ट्रीयता का वर्णन किया जायेगा।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि।

5. माखन लाल चतुर्वेदी की रचनायें- पुष्प की अभिलाषा, वीरव्रती आदि।

6. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनायें- झांसी की रानी और विदा आदि।

सुभद्रा कुमारी चौहान- आधुनिक हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान(सन्1904ई.- 1948 ई.) का स्मरण स्वतंत्रता सेनानी लेखिका के रूप में किया जाता है । सुभद्रा कुमारी का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रयाग शहर में हुआ था । 9 साल की उम्र में उनकी पहली कविता उस समय की प्रदिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' में छपी । बाल्यकाल से ही वे देश प्रेम की भावना से प्रभावित थीं ।

विवाह से पूर्व और विवाह के बाद भी उनकी प्रवृत्ति राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने की रही । महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया । इस संबंध में उन्हें जेलयात्रा जेल यात्रा भी करनी पड़ी ।

सुभद्रा कुमारी ने अपने विद्रोह स्वभाव से अशिक्षा और अंधविश्वास का खंडन किया और जाति-पात, पर्दा आदि रुढ़ियों को तोड़ा । उन्होंने मध्यप्रदेश में नारी जागरण के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किये, वे भारत के सामाजिक विकास में स्मरणीय हैं । अपनी समाज सेवा, देशभक्ति और कर्मठता से सुभद्रा कुमारी ने कई राष्ट्रीय कार्य किये, वे भारत के सामाजिक विकास में स्मरणीय हैं ।

अपनी समाजसेवा, देशभक्ति और कर्मठता से सुभद्राकुमारी ने कई राष्ट्रीय कार्य किये, परंतु साथ ही उनकी कविताएं हिंदी के पत्रों और पत्रिकाओं में निरंतर छपती रहीं । उनकी असामयिक मृत्यु के कारण हिंदी जगत् को उनकी प्रतिभा का पूरा लाभ नहीं मिल पाया ।

सुभद्रा कुमारी चौहान के पास एक निश्छल नारी हृदय था जो देश प्रेम और देश के प्रति बलिदान की भावना से भरा हुआ था । उनकी भाषा और काव्य शिल्प भी सरल थे । सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में वात्सल्य, प्रेम, देशभक्ति, वीरोचित हुंकार, करुणा आदि कई विषय दिखाई देते हैं ।

'त्रिधारा' में कुछ स्फुट कविताओं के अतिरिक्त उनका 'मुकुल' नामक एक ही कविता-संग्रह है जो पहली बार 1930 में प्रकाशित हुआ । इसके अतिरिक्त कुछ कहानियां भी उन्होंने

लिखी थीं। सुभद्रा कुमारी की राष्ट्रीय कविताओं में देशप्रेम, भारतीय संस्कृति में आस्था और प्राचीन इतिहास के प्रति गौरव परिलक्षित होता है।

उनकी देशप्रेम की कविताओं ने जन-आंदोलन का काम किया, लोगों में जागृति फैलाई और देश की स्वाधीनता के लिये उत्साह जगाया। सुभद्रा कुमारी ने जलियांवाला बाग के हत्याकांड की प्रतिक्रिया पर बहुत ही मार्मिक कविता लिखी। अपनी कविता 'जलियांवाले बाग में बसंत' के अंतिम भाग में कवयित्री कहती हैं-

कुछ कलियाँ खिली यहाँ इसलिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना॥
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर॥
यह सब करना, किंतु
बहुत धीरे से आना।
यह है शोक स्थान
यहाँ मत शोर मचाना॥

उन्होंने 'जेल' को तीर्थ स्थान माना है जो आरंभ से ही संघर्ष की चेतना का प्रतीक है। 'विदा' कविता में उनकी पंक्तियां हैं-

जेल! हमारे मनमोहन के प्यारे पावन जन्मस्थान।
तुझ को सदा तीर्थ मानेगा कृष्णभक्त हिंदुस्तान॥

उनकी कविता 'झाँसी की रानी' कुछ दिनों में ही इतनी लोकप्रिय हो गयी और लोगों की जुबान पर चढ़ गयी कि विदेशी शासन को उसे जब्त करने की घोषणा करनी पड़ी। इस कविता में कहा गया है कि रानी के रूप में स्वतन्त्रता ही नारी बनकर भारतवासियों को जगाने आई है। इसमें इतिहास के साथ लोकगाथा का रस है-

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

यह कविता रानी की शूरवीरता, निर्भयता और राष्ट्रप्रेम का ओजस्वी वर्णन करने के कारण उनका स्मारक बन गयी है। लोगों ने इसे राष्ट्र के हृदय की झंकार माना। साहित्यकार रामकुमार वर्मा ने इस कविता पर 'मुकुल' की भूमिका में लिखा है- 'झांसी की रानी' का प्रत्येक शब्द वह पुरानी कहानी इतनी तीव्र भाव से कहता है कि हृदय तड़प उठता है, विचारधारा में तूफान आ जाता है और ताल देकर समीप की वायु गूँज उठती है।

स्वदेशप्रेम और राष्ट्रीयता के भावों को लोगों के हृदय में उद्दीप्त करना सुभद्रा कुमारी चौहान की अधिकांश कविताओं का मुख्य उद्देश्य था। उन्होंने ऋतु वसंत को लेकर 'वीरों का कैसा हो वसंत' जैसे प्रेरणाप्रद स्वर में जो कविता लिखी, उसने देश के युवकों में वीरता और उत्साह का संचार किया।

राष्ट्रीय आंदोलन के समय कविताओं से लोगों को प्रोत्साहित करने वाली कवयित्री ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद स्वतंत्र देश का स्वागत करते हुए गाया-

आ, स्वतंत्र प्यारे स्वदेश आ,

स्वागत करती हूं तेरा।

तुझे देख कर आज हो रहा,

दूना प्रमुदित मन मेरा।

वात्सल्य का सजीव अंकन करने में उनकी कविताओं में ममता का निश्चल भाव भी दिखाई देता है, जिससे उनकी एक सरल सौम्य छवि सामने उभरती है-

मैं बचपन को बुला रही थी,

बोल उठी बिटिया मेरी।

महादेवी वर्मा ने सुभद्रा कुमारी की रचनाओं में वात्सल्य और वीर रस के चित्रण पर अपनी पुस्तक में लिखा है, 'सुभद्रा में जो महिमामयी माँ थी, उसकी वीरता का उत्स भी वात्सल्य ही कहा जा सकता है। न उनका जीवन किसी क्षणिक उत्तेजना में संचालित हुआ, न उनकी ओज भरी कविता वीर रस की घिसी-पिटी लीक पर चली।'

यहाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में से तीन चर्चित राष्ट्रीय कविताएँ- वीरों का कैसा हो बसंत, झांसी की रानी और विदा हैं।